

झारखंड में मोटे अनाज की खेती को मलिंगा बढ़ावा

चर्चा में क्यों?

26 जनवरी, 2023 को झारखंड कृषि विभाग ने भारत सरकार के आदेश के आलोक में मोटे अनाज (मलिट्स) को भी बढ़ावा देने का नरिणय लयिा है। इसके लयिा अब वभिाग की इकाई समतिने 10 करोड़ रुपए की योजना बनाई है।

प्रमुख बदि

- इस योजना में आने वाले सालों में झारखंड के वभिन्न ज़िलों में मोटे अनाज के उत्पादन को बढ़ावा देने की योजना तैयार की गई है। राज्य में मोटे अनाज के उत्पादन को बढ़ावा देने की पूरी संभावनाएँ हैं। यहाँ पहले कई प्रकार के मोटे अनाज उत्पन्न होते थे।
- उल्लेखनीय है कि कृषि विभाग पछिले दो साल से अपने बड़े कार्यक्रम में मोटे अनाज के उत्पाद ही अतथियों को परोसता है। कृषि विभाग की कार्यशाला में मडुआ की रोटी, मडुआ का पीठा, छलिका रोटी आदि परोसा जाता है।
- कृषि विभाग मोटे अनाज की उपयोगति और संभावना पर राज्य से लेकर प्रखंड स्तर पर सेमिनार का आयोजन करेगा।
- ज्ञातव्य है कि भारत सरकार वर्ष 2023 को मलिट्स ईयर के रूप में मना रहा है। इसको देखते हुए राज्य सरकार ने भी योजना तैयार की है। इसमें मोटे अनाज पर काम करने वाले वशैषज्ञों की राय भी ली जाएगी।
- झारखंड में रागी उत्पादन की अच्छी संभावना है। एपडिा की रपौरट के मुताबकि, झारखंड में 15 हज़ार टन के करीब रागी का उत्पादन होता है। वत्तितीय वर्ष 2017-18 में यहाँ 18 हज़ार टन के करीब उत्पादन हुआ था। ज्वार का भी उत्पादन करीब एक हज़ार टन हो रहा है। यह तब हो रहा है, जब सरकार की प्राथमकिता सूची में यह नहीं था।
- इकाई समति के नदिशक अजय कुमार ने बताया कि राज्य में वर्षों पहले से मोटे अनाज की खेती होती थी। यहाँ के जनजातीय समुदाय मोटे अनाज की भरपूर की खेती करते थे। बाज़ार नहीं होने के कारण इसको बढ़ावा नहीं मलि सका।
- उन्होंने बताया कि अब मोटे अनाज को बाज़ार की दक्किंत नहीं है। यह बाज़ार में काफी महंगा भी बकि रहा है। इसका सबसे बड़ा फायदा है कि यह पूरी तरह आर्गेनकि फसल है। इसमें कीटनाशक की ज़रूरत नहीं होती है और यह कम पानी में तैयार हो जाता है।
- वदिति है कि झारखंड में समय-समय पर सूखा पड़ जाता है। इसको देखते हुए झारखंड के लयिा मोटे अनाज की खेती काफी कारगर साबति होगी।